गीतरसिका।

जिसमें

धुरपद ख़याल कई रागनियां और कई प्रकार की
ठुमरी, होली, बसन्त, ग़ज़ल, लावनी, दादरा
आदि पद हैं

बाबू हीरालाल
असिस्टंट मास्टर ज़िला स्कूल बिलासपुर सेन्ट्रल
प्राविन्सेज़ ने बनायी

वही

GITA RASIKA

OR

A BOOK OF SONGS

COMPOSED BY

MUNSHI HIRA LAL,
ASSISTANT MASTER,
ZILA SCHOOL, BILASPUR,
CENTRAL PROVINCES.

स्थान लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपी
अगस्त सन् १८८१ ई०

गीतरसिका ॥

सूचना

——oo——
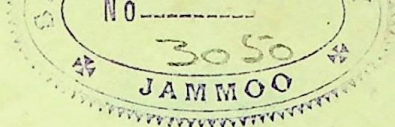
इस गीतरसिका में एक दो धुरपद एक दो ख़याल और कुछ रागनियां और बहुतसी ठुमरी होली बसन्त गज़ल लावनी भरीहैं यह रसिका ऐसे २ महाशयोंके हेतु निर्मित हुईहै जो२ जन कि एक दो धुरपद व ख़याल कहकर और पुनि कुछ रागनियोंको गाकर प्रकार२ की ठुमरी होरी बसन्त दादरा आदि पदोंको गा व गवाकर अपना समय ऐसा काटतेहैं मानो शोकमय समय के घंटे दो घंटेतक अपना मन बहलातेहैं कथित पदोंके अर्थ भी वेहीहैं जोजोकि कथित जनोंको साधारण पूर्वक बहुधा हर्षप्रद मालूम होते हैं इस रसिका के गाने गवाने में सत्यानन्द होवे चाहे न होवे परन्तु रसिकामें आनन्द कथित जन जानलेंगे ॥

किसीको अधिकार नहीं है कि कोई जन इसमेंको किसी भी पदको दूसरी किसी पुस्तक में छापे व छपावे ॥

इति

सन् १८८१ ई० ॥ ॥ हीरालाल ॥

गीतरसिका।

सूचीपत्र।

———oo———

नं०	रागनी	पृष्ठ	नं०	रागनी	पृष्ठ
१	चतुष्पदाछन्द	१	२१	तथा	६
२	तोटकछन्द	१	२२	सोरठ	७
३	ख़याल—सोहनी	१	२३	काफी	७
४	तथा—तथा	२	२४	देश	७
५	धुरपद—खम्बाज	२	२५	तथा	८
६	तथा—तथा	२	२६	खम्बाज	८
७	भैरवी	२	२७	होली	८
८	तथा	३	२८	तथा	९
९	ख़याल—सिंधु	३	२९	तथा	९
१०	वसन्त बहार	३	३०	तथा	१०
११	ईमन कल्याण	३	३१	तथा	१०
१२	कान्हड़ा	४	३२	तथा	११
१३	केदारा	४	३३	तथा	११
१४	आसावरी	४	३४	बसन्त	१२
१५	पूर्बी	५	३५	तथा	१२
१६	झंझोटी	५	३६	तथा	१३
१७	झंझोटी	५	३७	बसन्त	१३
१८	परज	६	३८	तथा	१४
१९	सारंग	६	३९	तथा	१४
२०	काफी	६	४०	तथा	१४

नं०	रागनी	पृष्ठ	नं०	रागनी	पृष्ठ
४१	ठुमरी	१५	५१	तथा	१८
४२	तथा	१५	५२	ग़ज़ल	१८
४३	तथा	१६	५३	तथा	१६
४४	तथा	१६	५४	तथा	१६
४५	तथा	१६	५५	लावनी	२०
४६	तथा	१७	५६	तथा	२०
४७	तथा	१७	५७	चुटकला	२०
४८	तथा	१७	५८	दादरा	२१
४६	तथा	१८	५६	तथा	२१
५०	तथा	१८	६०	कहरवा	२१

॥ गीत रसिका ॥

(१)

चतुष्पदा छन्द ॥

जय जय गण राया, शंकर जाया, प्रथम पूजवत भारी ।
पारबती नन्दा, आनंद कन्दा, द्रवहो कलि दुख हारी ॥ १ ॥
अनादि अविनाशी, बुध गुण राशी, भाल बिशाल सुसोहे ।
जय मूषक बाहन, बरगज आनन, एक दशन छवि मोहे ॥ २ ॥

(२)

तोटक छन्द ॥

जय देवि महा अजकी तनया । दुति दामिनि धारिणि का-रिणि भा ॥ १ ॥ जय ज्ञान मते परमेश्वरी । गुण रूप गान बहु देत खरी ॥ २ ॥ जय देवि नमामि कृपा करणी । जननी छबि जाय नहीं बरणी ॥ ३ ॥ नहिं आदि नहीं अवसान नहीं । यह बीच यही तव रूप सही ॥ ४ ॥ जय ज्योति सुरूप धरी द्रवहो । जननी जननी सुकृपा करहो ॥ ५ ॥ कवि की कविता मुनि की मुनिता । सुर की सुरता सब काज यता ॥ ६ ॥
नभकी सबहीं बिजली बिजली । तव रूप करे सुगली सुगली ॥ ७ ॥
नमहूं नमहूं जग की जननी । करहो ममतोष दयी शरणी ॥ ८ ॥
बुधि गायनकी बहु देहु यदा । जय शारद शारद देवि सदा ॥ ९ ॥

(३)

ख्याल - सोहनी ॥

लाजे लाज लजाये लाल ललना ॥
लागी लालन सुकान काहू की,
लागे भलना ललनो फलना ॥ १ ॥

(४)

ख्याल सोहनी ॥

भई रात सजनी आधी रतिया ॥
पिया हमारे अजहुं तो न आये, जानैं बिलमरहेसवतनिया ॥ १ ॥
मोरो जियरा अबतो कलपतहै, फाटतहै बहुमोरीछतिया ॥ २ ॥

(५)

धुरपद-खम्बाज ॥

आज अधिराज राजि बिराजे, सकल साज साज साजि साजे, राजि राजे सजि सजाइ आज ॥ लसत कलगि सिर कानन भूषण, हस्तअस्त्रशस्त्र कछुहुन दूषण, अस पिया मोरेसाजे साज ॥ १ ॥

(६)

धरपद-खम्बाज ॥

गाइये नाचिये सुरिझाइये, प्यारे मनवारि प्राण पिया, निशि दिवस हमारो जो सुख खान ॥ वारिय तन मन सेविय निशि दिन, आन काज नहिं यह काज सुमम, बाढ़त नेह बहुमान समान ॥ १ ॥ पालिय आज्ञा लेखिय तासुख, जाते पति प्रिय पावहीं बहु सुख, मामे हमकहं सुप्रिया अपान ॥ २ ॥

(७)

भैरवी ॥

जागो जियरा मेरा जागो जिय मोरे ।
भोर भयो अबतो उठ बैठो ढिगतोरे ॥
उडु गण अब छपनलाग, इन्दुश्वेत होरे ।
काग बोल भांति भांति, रविआनिकरोरे ॥ १ ॥
झारी जल लाई भरि, मज्जन मुख होरे ।
जगहु जगहु जगहु पिया, पियकाज लगोरे ॥ २ ॥

(८)

भैरवी ॥

जागिये प्रिय पिय प्राणनाथ अब,जागियप्राण सु प्यारे ।
सोवत शय्या सुन्दर रजनी, बीतगई सब वारे ॥
पुहुप फाट घाट जोति चन्द्रमा,छिपन लगेसब तारे ।
रवि किरणों अब दृष्टि परतहै, बोलें बहु कागारे ॥ १ ॥
लोग लुगाई काज करत हैं, तुम सिजिया पिय प्यारे ।
द्वारे अपने भीर भई है, प्रीतम जगहु हमारे ॥ २ ॥
माजन आनन कर पद धोवन, भूषण बस्त्र सजारे ।
प्राण प्रिय अब बिलम्बहोतहै,जगहो जगहोप्यारे ॥ ३ ॥

(९)

खयाल सिंध ॥

अहे सइयां हमारे,विनय करों परदेश न गमनोरे ॥ कलपत बिलपत, रोवत धोवत, हृदया फाटत, मोरे प्राण निकसोरे ॥ १ ॥ विष मंगाऊं,मैं अब खाऊं, प्राण छुड़ाऊं, तनलेन लेचलोरे ॥ २ ॥

(१०)

बसन्त बहार ॥

सइयां सोऊं सुख सन्तोषे । लपकत झपकत,उछलतपुछलत, कूदत फांदत पोषे ॥
वार बार मो चुम्बत लपटत, हृदया दाबत माई ।
करमोड़त पुनि कटिमम तोड़त, रोहत ऊपर आई ॥ १ ॥
करहीअचेत मोंही न चेत, करत क्रीड़ बहुतोंही ।
तनमनकी सब तपनबुझावत,तबछांड़तहै मोंही ॥ २ ॥

(११)

ईमन कल्याण ॥

सजनी मैं तो बिरहा की मारी आई ॥
एक बरष मानो युग बीतो, पिय नहिं पता पताई ।

आश मिलनकी लाग रही है, वेग आन सु बताई ॥ १ ॥
आन कह गये नहिं आये पिय, पुरी प्रतिज्ञा माई ।
आज रात लों जो नहिं आये, प्राण हानि सहसाई ॥ २ ॥

(१२)

कान्हड़ा ॥

सइयां मों से आइ कहे, परदेश सुगमना ॥
सुनत हृदय अस बेध्यो माई । मानो बाण लगे बहु आई ॥ १ ॥
कलपत बिलपत रजनी बीती । कांपतसुहृदय जूड़ीशीती ॥ २ ॥
रोवत बीतो दिन चण्डाला । मानो फांसी रतकर जाला ॥ ३ ॥
पिया पधारे पयान प्राणा । कन्त करें जो निजमन माना ॥ ४ ॥

(१३)

केदारा ॥

सखी शोक संसार सांज सजि साज सजो ॥
गली गलीमें सुगली आली । लोको नाहीं परजग जाली ॥ १ ॥
कलपनबिलपनतलफनरोवन।सिसकनसांसनकछुनहिंजीवन॥ २ ॥
व्यथाअरु पीरदुखबहुनाना । रोगसोगबहु अहित अमाना ॥ ३ ॥
कल्पितहर्ष अरुकछु नहिंमाई । जोइ जगत्में लोकोआई ॥ ४ ॥
याते बिधिभलनाहींकीन्हीं । मांगे मृत्युनहीं जो दीन्हीं ॥ ५ ॥

(१४)

आसावरी ॥

प्राण प्रिया रिस तजके, हंसि हंसिके बोलो ॥
नयन उघारो आनन खोलो, मुख तेरो रस चाखों ।
कंठ लगाऊं धीर धराऊं, माधुर बाणी भाखों ॥ १ ॥
मानहिं त्यागो मानहिं धारो, हों हैं तेरो चेरो ।
सुधा सुरस तवमुखनि जियावो, नहिंतोमरणोमेरो ॥ २ ॥
कोप किये कछुकारण काहा, कहोप्रिया मनखोलो ।
मैं तो कबहूं चूको नाहें, तुम काहे रिस बोलो ॥ ३ ॥

(१५)
पूर्वी ॥

नदिया न जावोसइयां शितियापरतहै, शितियादेतअकड़ायहो॥
कर पद तुम्हरे कोमल पतरे, वायु बतास लगिजाय हो।
गोरो बदन बनैगो कारो, सुन्दरता सब नशायहो ॥ १ ॥
शीती बतास जाड़ो लागे, ओष्ठ दशन कम्पाय हो।
याते मोरे ढिग तुम वासो, सुन्दर शय्या सजाय हो ॥ २ ॥

(१६)
झंझोटी ॥

सजनी सुसखो की शुभ सुन्दरता, शोभा शोभा साज सजाई ॥
मुखड़ाचमकतहैमानो चन्द्रमा, छवि छविछविमांछबिछबिछाई।
लोचन मृगनी मीन पंकज पात, नासिक सुंदरकीर सुहाई ॥ १ ॥
दशन कली दाड़िम ओष्ठ बिम्बा, गालन कोमल मनु कुमलाई।
सुकंठकपोतजनु श्रीफलहृदया, देहदामिनी अतिचमकाई ॥ २ ॥
केश शीश मनु भ्रमर बहु माला, नाना विधि कररूप बनाई।
केरा मानो सुजांघ कोमलता, तन स्पर्श कर मललगजाई ॥ ३ ॥
पतरी अंगी कोमल बहु रंगी, शृंगार सोरह साज सजाई।
भूषण बारा भावत नानाबिधि, मानोंरती बनी सुवनाई ॥ ४ ॥
सुन सजनी वा सखी बड़भागिनी, रीझत पिया देखतरिझाई।
हमरे पियातोहमसे नहिंबोलें, दईरीतियह उलटिचलाई ॥ ५ ॥

(१७)
झंझोटी ॥

साजन मोरे अब कोप गये। रिस भरे उठे सवतनिके भये ॥
पिया नासिका माखिन बैठे, ऐसे ऐसे कोपी सुभये।
तिनकी कृपा रहों अभिलाषी, सजनी निठुरता आजठये ॥ १ ॥
ना जानों का चूक परीहै, कछुहु नाहिं मोसे बोल दये।
आवत यीमें सिजिया सजनी, इतनेमा चले उठितोगये ॥ २ ॥

(१८)

परज ॥

बलम मोरे हमसे छल कीन्हें आज, ऐसे कपटी सइयां ॥
हमसे तो आवनहि कहि गये। आप सजे कहुं अंत साज ॥
हमतो जानतहैं कपटी वड़ । उन्हें सवतनी सों काज ॥ १ ॥

(१९)

सारंग ॥

मोसे सही न जाइ बिरहा की पीर ॥
अस मन लागे जियरा त्यागों, जाय मरों नदिया सुतीर ।
कूप बावली जाय परों धों, पावक जाय जरों अधीर ॥ १ ॥
लाऊं खाऊं विष धों सजनी, सोऊं शय्या नहीं धीर ।
आनि मिलावो सइयां मोरे, नर जाथरी ऐसी पीर ॥ २ ॥

(२०)

काफी ॥

मइया मोरी गमना करादे मोरा ॥
संगनि साथनि नाम धरतहैं, कछुहुन जावे तोरा ।
तुमही माई सोच सुदेखो, दिन बीते नहिं थोरा ॥ १ ॥
हारी जननीसंगिसहेली,नित नितनिजपति ठौरा ।
भोगबिलासें वहुतखिलावें, ललना निजनिजकोरा ॥ २ ॥

(२१)

काफी ॥

सखीरी सइयां संग सेजिया सोऊं। लाज लजाई लालनलाजें लावें लोक लजेऊं ॥ सास सुननदी साली साढ़ू, जेठ जिठानिहुं जोऊं । मान मनाईमानन मानें, मनोन मानमनोऊं ॥ १ ॥
भोरे भोरे भर्त्ता मोरे, भोर भये भोरोऊं । रोवत रोवत रीती रजनी, काछुन कीन्हे कोनोऊं ॥ २ ॥

(२२)

सोरठ ॥

मान करोना मानिनि मान ॥

विनय करत बहु बेर भईहै, प्राण पयानहिं प्राण ।
कोपिनि अवतो कोप त्यागो, मोरी मान होआन ॥ १ ॥
कर पद सबरे शिथिल होतहैं, शरीर कम्पाय मान ।
सांस लेउंश्रति सांसत सिसकत, नेक द्वत देतब कान ॥ २ ॥
भूख पियास नींद सब खोई, घर बाहर नहिं सुहान ।
रात दिवस तव ध्यान रहतहै, सत्यमुसत्यसबजान ॥ ३ ॥
हाथ जोरी पइयां परतहों, शीशहिं प्रयानो प्राण ।
जो कछु कहो करोंमैं सोई । अबहुं तो मानिनि मान ॥ ४ ॥

(२३)

काफी ॥

प्राण प्रिया आय गरे लग जाओ ॥

पावक तप बहु बली होतहै, तनकी तपन बुझाओ ॥
हाथ जोरिके चरण गिरत हों, मोपर ध्यान लगाओ ।
यही काज या जग के माहीं, विपयन मुख्य कहाओ ॥ १ ॥
जब लगि आवो तपन दहतहै, शीत रसहिं पहुंचाओ ।
नहिं तो प्राण पयान होतहैं, आओ आओ आओ ॥ २ ॥

(२४)

देश ॥

सखीरी सेज मोऊं सजना साथ ॥

हियमां हारी हारी हासी, हेरी होत हत हात ।
मनात मनात माने नाहीं, मान मनाई मनात ॥ १ ॥
भोरे भलो भिवों भोंहूं, भृकुटी भय भय सुभात ।
जोऊं जियरा जियरा जारत, जियरा जियरा कुजात ॥ २ ॥
चित चोरूं तोचित नहिंचेतो, चितनचाहिं चितचात ।

सजनी सजना सोवत संगत, सोवे नाहिं सोवात ॥ ३ ॥
पांव परत हों प्यारी जारी, पावों पाइन प्रभात ।
जोलों जानों जावन जाहों, जावोनाहिं जबजात ॥ ४ ॥

(२५)

देश ॥

जाऊं न पनियां मइयां नदियां तीर ॥
नदियां मेरे कण्टक घेरे, पन्नग चलहीं अधीर ।
बाघ भालु बहु बानर वानर, नाद करहीं करि भीर ॥ १ ॥
बाटहिं मइया युव जन ठाढ़े, नैन सैन करें मीर ।
बोली ठोली मारहिं मोहीं, मरों लाज भय सु भीर ॥ २ ॥

(२६)

खम्माज ॥

सखी मइयां संग सोवेनाहीं, पावक तप मों अधिक सताहीं ॥
हाथ जोरि अरु पइयां परि हारी, कलपी विलपी माने नाहीं ।
हारी सजनी उपाय नहिं सूझे, मरण सुठानी मैंमन माहीं ॥ १ ॥
देखो आली मोरी संग सजनी, बाल खिलावें कोरा माहीं ।
अबलों सखी मैं कछु नहिं जानों, पिय मोरे भल केसे आहीं ॥ २ ॥

(२७)

होली ॥

बिरहा को रोग लगो मोहिं भारी ॥
खान पान भल भल न भातहै, भूंख पियास बिसारी ।
सारी रजनी नींद न आवे, बिरहा की मैं मारी ॥
सब ते हम हो हारी ॥ १ ॥
गृह गृह को सब लोग लुगाई, भय होरी खिलवारी ।
सानन्द नाचें गाय बजावें, सिसकत हम सिसकारी ॥
ऐसी आपत्ति भारी ॥ २ ॥
सुनो सखी नहिं होरी खेलों, यदि पिय नहिं दरसारी ।

नाहिं तो प्राण पयान करहीं, महि उलटी हो जारी ॥
॥ भई मीन बिन बारी ॥ ३ ॥
प्रीतम तुम्हरे संग रहत हैं, ताते हो सुख बारी।
निठुर पिया निठुरता ठानी, मो कहं निपट बिसारी ॥
॥ अस होरी जर जारी ॥ ४ ॥

(२८)

होली ॥

आली जरोरी अस होरी बरोरी ॥
जरि जावे अस बसन्त सजनी, ऐसो फाग जरोरी।
पावक लागे रंग गुलाल मां, पिचका भार परोरी ॥
॥ भल बालम बिसरोरी ॥ १ ॥
कढ़ावा तलौं हांसन खेलन, गावन नाच बरोरी।
चूल्ह जरो अस होरी कौतुक, असो धूम सु लगोरी ॥
॥ बालम बिना जरोरी ॥ २ ॥
तुम तो सब आनन्द मगन हो, बिरहा है तन मोरी।
दावा दग या तनमां सजनी, प्राण पयान बरोरी ॥
॥ नेही नहिं गृह मोरी ॥ ३ ॥
बेग बिलम अब सुध तुम लेवो, नहिं तो होवत होरी।
तन मन बारि होरि मां जारों, होरी जाय जरोरी ॥
॥ प्रिया होरी बरोरी ॥ ४ ॥

(२९)

होली ॥

सइयां को कोऊ आन दिखाओ ॥
सइयां बिनां सब सून लगत है, घर बाहर न सुहाओ।
भूख पियास नींद सब भागे, नेक चैन नहिं आओ ॥ १ ॥
जब प्रिय प्रीतम घर महं आवें, तबहिं प्राण सुख पाओ।
बेग हमारे कन्तहीं लावो, जाते हो मन भाओ ॥ २ ॥

(३०)

होली ॥

सवतनिया मोरी होरी ऐसी आई ॥
चोवा चन्दन केसर अबीर, रंग गुलाल मिलाई ।
संगकी संगनि सखी सहेली, हिल मिल फाग मचाई ॥
मै तो मरन धराई ॥ १ ॥

सजि सजिके सब शृंगार साजों, सब गृह ते चल धाईं ।
गावहिं नाचहिं हरष हरष के, मानो चैन उड़ाईं ॥
हम बिरहा मर जाई ॥ २ ॥

सब निज सइयां संग सखीरी, खेलें होरी आई ।
हम इकली तलफें गृह मांही, मीन नीर नहिं पाई ॥
अस हमरी गति माई ॥ ३ ॥

जाओ सजनी लाव पियाको, अबहीं देहुं बताई ।
नहिं तो झोकों तन होरी मां, चाहे महि उलटाई ॥
सवतनिया अस आई ॥ ४ ॥

(३१)

होली ॥

सवतनिया होरीमां आग लगोरी, आग लगोरी बज्र परोरी ॥
बिजुरि परे या बसन्त ऊपर, अहिनि डसे या होरी ।
नाहर निगरे या कौतुक का, राहु ग्रसे या पोरी ॥ १ ॥
माटी मिलो या रंग गुलाल, धूर परो सब मोरी ।
बिष परो या भंगके माहीं, पान सुपुंग जरोरी ॥ २ ॥
भूषण सगरे पाथर होवें, होवे टाट पटोरी ।
दावा लग या सिंगार माहीं, कारो मुखहिं करोरी ॥ ३ ॥
ढोलक झांझ मृदङ्ग मंजीरा, बाजन सकल बरोरी ।
सड़ो गड़ो तुम्हरो झम झमनी, घर मेरो लग होरी ॥
आह दई हम काह बिगारा, पिया नाहिं घर मोरी ॥ ४ ॥

होरी हेतु जरों में सजना, होरी नाहिं जरोरी ॥ ५ ॥

(३२)

होली ॥

सइयां संग मोरे अब होरी मनाई ॥

साजो सजनी सिंगार साजें, सजि सजि साज सजाई ।
साजि सामग्री गान नाचकी, अपन अपन संगाई ॥
निज निज प्रियहिं रिझाई ॥ १ ॥
खेलें खेलें सुरंग गुलाल, पिचका पियहिं चलाई ।
हिल मिल के चल फाग करोरी, गाय नचाय बजाई ॥
आनन्द मगन सुघाई ॥ २ ॥
काम नारि बहु सिंगार करके, ऐसी होरी आई ।
हे सजनी जनि चूको अवसर, पिय हमरे संग माई ॥
मैं तो लोक भुलाई ॥ ३ ॥

(३३)

होली ॥

पीर उदर अस रंग रंगाई । सही न जाइ मोसे अब भाई ॥
जूड़ी तप सब आदि निर्बलता, होरी खेलन धाई ।
हिल मिलके सब फाग मचावें, करनिर्बल मों भाई ॥
हे कछु बश न चलाई ॥ १ ॥
बोतल गिलास झारि कटोरी, सब पिचका सम आई ।
जड़ी बूटि सब औषधि नाना, बिधि बिधि रंग भराई ॥
बान्ति आदि बहाई ॥ २
पीर सुमट अस मद लावत है, मोहि अचेत कराई ।
रोवन धोवन माना गावन, मनु कबीर चिल्लाई ॥
तोसन गारी खाई ॥ ३
डाकृर वैद्य सकलन गुनियन, हार सकल जन खाई ।

ऐसी पीरा कबहुंन भोगी, प्राण हानि सुजनाई ॥
काहे लेत न भाई ॥ ४ ॥

(३४)

बसन्त ॥

कत जग जाई या प्रीति आली। रैन पिया बिन साली ॥
बिधि बवरो याही उपजाई, सोच बिचार न चाली।
मन माने की करतब जानी, दई गति कुगति आली ॥ १ ॥
नीर निरदयी मीन बिनरहत, मीन न जल बिनआली।
रबि रहही बिन पंकज सजनी, पंकज रबि बिन जाली ॥ २ ॥
कुमोदनी अरु चकोर पत्ती, इन्दु बिना नहिं पाली।
निशि नाहा नहिंदु:खउठावे, दई उलटि गति आली ॥ ३ ॥
ऐसी सजनी हमरी गतिहै, पियहिं दु:ख नहिं साली।
हम मरहीं बिरहा के मारे, जरै अस प्रीति आली ॥ ४ ॥

(३५)

बसन्त

देहु मधुर चुम्बन एक प्यारी ॥
नाहीं नाहीं तुम तो बोलत, हम को निष्फल मारी।
ओष्ठ कांपत जिह्वा चपलत, दशन तोर सब जारी ॥
सूखत गर अति भारी ॥ १ ॥
तोर कपोल कमल सम कोमल, मिष्ठानी तूलहारी।
मेरो ओष्ठ यदि पाथरतुल्य; तदपि बश नहीं आरी ॥
अब तो जनि तरसारी ॥ २ ॥
नाहीं तो मम ओष्ठहिं काटो, रसना नाशहु बारी।
दशनन मोरे काइ लगावो, तो हू मन नहिं टारी ॥
इत सुध्यान लगारी ॥ ३ ॥
चुम्बन दिये कछुन घटिहै, मोर प्रेम बढ़जारी।

हाथजोरि के चरण गिरतहों, शीश तोहि मैं वारी ॥
देहो देहो प्यारी ॥ ४ ॥
हठ तजि मेरी बिनती मानो, पिघलहु द्रवहु प्यारी ।
प्रेम रसचाखे बिन नरहि हों, वरु प्राण निकरि जारी ॥
चुम्बनलेहों प्यारी ॥ ५ ॥

(३६)

बसन्त ॥

प्रेम रस मोहिका चाखनदेरी ॥
प्रेम रस लाग ओष्ठ सूखत, रसना निकर परेरी ॥
गर सूखत है मानो सुतृषित, किमि तृषा बुझेरी ॥
काहे मान करेरी ॥ १ ॥
प्रेम रस लाग जिय निकसतहै, जलन पियास बुझेरी ॥
रह रहके मन अगिन बरत है, ऐसी तपन बरेरी ॥
सो नहिं जात कहेरी ॥ २ ॥
तव हठते मम प्राण बिलपहीं, मन नहिं धीर धरेरी ।
हां हां करिके चाखों रसका, जाते तपन हटेरी ॥
देरी देरी देरी ॥ ३ ॥

(३७)

बसन्त ॥

आज सइयां बर बस मोसे कीन्हीं ॥
चुम्बनचाखे हृदया दाबे, लपटत उठाय लीन्ही ।
फर मरोरके पटक झटकके, पलका पौढ़ा दीन्ही ॥
मोरी पीरन चीन्ही ॥ १ ॥
पुनि तनकी सबतपन बुझाये, कामशान्तनिजकीन्ही ।
तब तो त्यागे मानो माखी, मन मानेरस लीन्हा ॥
अति दारुण दुख दीन्ही ॥ २ ॥

(३८)

बसन्त ॥

सखियां सुघर संग सोश्रो मोरे । जाते तनकी तपन बुझोरे ॥
विश्राम ग्रह महं शय्या साजो, गन्ध सुगन्ध सजोरे ।
भांतिभांति कर मेवामिष्ठान, फल पकवान धरोरे ॥ १ ॥
सब सुख है पर तुम बिन सजना, सबहीं सून परोरे ।
चलोचलो अबबिलम न होवे, मनसुलगतबहुमोरे ॥ २ ॥

(३९)

बसन्त ॥

हस्तकीरमेरोगयेऊ उड़ाई । मलतहस्तरहेऊंपछताई ॥
पालि पोसि बहु प्रेम्यों नेह्यों, मंजु मिष्ठान जिवाई ।
अशिदिन राखत निजकोरामहं, हिंडोल सेज सुवाई ॥
सो अब उड़त भजाई ॥ १ ॥
कीर सुलागी बांस कूप महं, डारि कानन घुमाई ।
गगन केर मैं तारा तोड़े, नीर पताल कढ़ाई ॥
जल निधि थाह यतनाई ॥ २ ॥
जो जो नाहीं करनन योगी, सोसो मैं करवाई ।
लड़ेउं भिड़ेउं सब लोगन से, बहुत कुनाम उठाई ॥
तैहुन बनत बनाई ॥ ३ ॥
मोरे जियमां अस आवत है, सो जाऊं विष खाई ।
आह दई हो का करहो अब, कीर मृत्यु कहं पाई ॥
नतु मोकहं ले जाई ॥ ४ ॥

(४०)

बसन्त ॥

पीर उदर कछु कहिनहिं जारे, बिन मृत्यु के मर्‌यों मैं मारे ।
ऐसी पीरा कबहु न भोगी, जीवन राज हमारे ।

जैसी लोगो अब भोगत हों, टरत नहीं बहु टारे ॥
चलत न वश कछु हारे ॥ १ ॥
डाक्टर बैद् य गुनिया लोगन, छोट बड़े सब हारे।
औषधि मौषधि झाड़व फूंकव, कछु नहिं काज सुआरे ॥
भल उदर रोग वारे ॥ २ ॥
खाइ न खाई जब हों चाहे, पीरत निशि दिन सारे।
होवत भारी पीरत शूलत, बेधत बरछी वारे ॥
जरे अस रोगवारे ॥ ३ ॥
बिलपत कलपत रोवत, धोवत, अचेत सो करडारे।
जीवन अस में इच्छित नाहीं, देमोहि मृत्यु भलारे ॥
ईश बिनय सुन जारे ॥ ४ ॥

(४१)

ठुमरी ॥

भला सजना इत आजारे ॥
बाट निहारत बीती रजनी, भोर बेग नहिं होजारे।
तलफत हों पिय तुम्हरे लागी, गरे आय अब लग जारे ॥ १ ॥
बासर फाटत फाटत जियरा, काहे प्राण निकर जारे।
आशा लाग रही सुमिलन की, आजा आजा आजारे ॥ २ ॥

(४२)

ठुमरी ॥

प्राण प्यारी कहां रैन रमाई, रैन रमाई रात बिताई ॥
बाटत निहारत लोचन फूटे, आंसुवन सरिता बहाई।
हृदय मोर शत खण्ड खण्ड भयो, काहे ठानी निठुराई ॥ १ ॥
रजनी सारी सूनी शय्या, तारा गण इन्दु बिहाई।
मानो गृह मां दीपक नाहीं, ऐसी तोही बिन छाई ॥ २ ॥
पल घंटा सम घंटा रजनी, युग सम सब रैन गंवाई।
भोर होत कत आई प्यारी, कस यह दिवस बीत जाई ॥ ३ ॥

(४३)

ठुमरी ॥

प्राण प्रिया काहे हठ ठानी, ऐसी मन मानी ॥
तव बिन मोही भल नहि लागे, निशि बासर तोर ध्यानी ।
बावर मोही लोग कहत हैं, मैंतो तोही पहचानी ॥ १ ॥
इतहि निहारो नयनहि खोलो, हसो कोप नहीं आनी ।
रत रस चाखों गरे लगावों, जियरा जूड़ करों पानी ॥ २ ॥

(४४)

ठुमरी ॥

जावो जावो सइयां चुम्बन मैं नाहीं देऊंगी ॥
चुम्बन देनों बहुत कहावे, छूवन मैं नाहीं देऊंगी ।
चुम्बन दिये मो कछु न मिलिहै, तुमहीं मैंनाहीं भेऊंगी ॥ १ ॥
चुम्बन लिये मम कपोल कोमल, पीरा पीरा बहु सेऊंगी ।
दशनन तुम्हरे गड़हीं ऊपर, ओष्ठ स्पर्श नाहीं लेऊंगी ॥ २ ॥
महि उलटै बरु नभ टूट परे, वर बश प्राण त्याग देऊंगी ।
मौन सुहावे इतनी बिनती, नहि नहीं नाहीं देऊंगी ॥ ३ ॥

(४५)

ठुमरी

रात बसे जहां जावो तहां सइयां ॥
रजनी काटे चैन उड़ाये, ताही को लेव बलैयां ।
काहे को अब बात बनावो काहे परत हो सुपइयां ॥ १ ॥
वा सवतनिया पर तुम रीझे, वाहीतो पार लगइयां ।
मोरे ढिग अब काज नहीं है, वाही से जोरो रतियां ॥ २ ॥
झूठी मूठी बिनय करत हो, करो तो नाहिं अबि बतियां ।
बज्र परो वा सवतनि ऊपर, जहां बसे सारी रतियां ॥ ३ ॥
मैं तो अबती रत नहि करिहैं, जावे जीव तो निकरियां ।
सारी रतियां भूल रहेहो, अब जावो तहां सइयां ॥ ४ ॥

(४६)

ठुमरी ॥

बतावो बालम बसे कहां सारी रात ॥
सारी रजनी तलफत बीती, निहारत तोरी बाट ।
बज्र समान छाती मैं सजना, तौहु तो तुम अठलात ॥ १ ॥
बाट निहारत नयना फूले, बड़ आंसुवन ढर जात ।
सांस लेत अति सिसकी सांसत, जिया जावे मतलात ॥ २ ॥
मम शय्या थल मीन भये हम, तुम नहिं रहे जल पात ।
आशा रही मिलन की प्रीतम, ताते जिया नहिं जात ॥ ३ ॥
तुम्हरे लोचन नींद भरीहै, कहो अब सांची बात ।
कौन सवतनिया तुमहीं पिया, जगाई सारी रात ॥ ४ ॥
जो जान जाऊं वा सवतनि को, देहुं करे जवालात ।
लात मारि होरी मां बारीं, ऐसी करी मम घात ॥ ५ ॥

(४७)

ठुमरी ॥

बलम मोहे बेंदी गढ़ा देरे, बेंदी गढ़ादेरे, हीरामोतीजड़ादेरे ॥
सतलड़ पचलड़ बाजू कंगना, फूल करण नथ सब हेरे ॥
बिनबेंदी मम मुखनाहिं सोहे, अस बेंदी बनवा देरे ॥ १ ॥

(४८)

ठुमरी ॥

जावो प्रिया नाहिं मोरे काम को, मोरे धाम को ॥
हेरी गवारी तुम तो बारी, आय परी रही प्राण को ।
कहा कहारी आपति हम झेली, ताहि कीन्हों अपनान को ॥ १ ॥
तब लगि मानिनि हमसे सब बिगरे, जनक जननी सब आनको ।
मित्र सित्र सब तब त्याग दीन्ह हम, तो न लागमे रनामको ॥ २ ॥
अब लगि तुम तो बहु प्रेमत मोही, जाय सुभई अब आनको ।
तेहैं मोरे गर काटन हारे, नेह तोरे उन बान को ॥ ३ ॥

हमसे तुम तो बहुत कपट कीन्ही, बोलत ऊपर सुमानकी ॥
तोरो अब तो मुख नाहीं देखौं, होय पयान बरु प्राणकी ॥४॥

(४९)

ठुमरी ॥

नथमां लटकनि नाहिं, बलम लटकनीलगादे ॥
लट कनियां मां हीरा लागे, ऊपर मोति जड़ादे ॥
जाते होवे ओष्ठ की शोभा, ऐसो सो लटकादे ॥ १ ॥

(५०)

ठुमरी ॥

हे सइयां सारी रंगादेरे, तापर पुनि ज़री टका देरे ॥
भांति भांति के भूषण भावें, अंग मां शोभा देरे ॥
बिन सारी सब फीको लागे, जल नहिं सरिता मेरे ॥ १ ॥

(५१)

ठुमरी ॥

पीर उदर कछु कहि नहिं जाई, पीरत शूलत बेधत भाई ॥
सारे उदर महीं शूलत मारत, बरछि बान बहुताई ।
लागत मोरे तो उदर महीं सब, कोमल हिय बिध जाई ॥१॥
कलपौं बिलपौं पुनि रोवौं वहु बिधि, असदुःख सहो न जाई ।
काल कूत निरखत सुजनक जननी, भ्रातादिक बिलपाई ॥२॥
बड़े बड़े वैद्य बड़ बड़ गुनिया, हारे कार कराई ।
औषधि अरु फूंकनि कछु नहिं लागत, मंच तंच शुभगाई ॥३॥
ऐसो पीरा मैं कभु नहि भोग्यो, जन्म जबते मैं पाई ।
कहं लगि बरणौं मोहिं मृत्युआवे, हारदाबं कहुं भाई ॥ ४

(५२)

गज़ल ॥

मेरीजान तुझ पर कुरबान, शबको नींद नहीं आती है ।

तड़फ तड़फ कर शब कटती है, पागल मुझे बनाती है ॥
जबजब याद करूं मैं तेरी, जान निकल तोजाती है ।
तेरा दिलतो पत्थर हुआहै, मोहब्बतनहीं आती है ॥ १ ॥
तेरे यार हुआ इख्त्यार, याद तेरी सताती है ।
ज़रा नज़र करो ग़रीबों पर, याद हमेशह आती है ॥ २ ॥
सख़्त दिलीतुम छोड़ो इतनी, नज़र तेरी घुमाती है ।
हाथ जोड़के पैरों पड़के, अरज़ मेरी सुनाती है ॥ ३ ॥
मारो नहीं जिलावो मुझको, ये मोहब्बत जाती है ।
हमेशह करूं तावेदारी, मेरे दिल में आती है ॥ ४ ॥
लातों मारो बुक्की मारो, नज़र तेरी सताती है ।
नज़र कटारी मारो मत तुम,छाती तो फट जाती है ॥ ५ ॥

(५३)

गज़ल ॥

नज़र भर देखलाईदे, मेरे यार, तू कहां है ।
नहींतो हुक्मदे मुझ को, मैंआजाऊं, तू जहां है ॥
मैं हो रहता हूं पागल, रहता नहीं, तू जहां है ।
जान तड़फतीहै मेरी, ये मोहब्बत, तोकहां है ॥ १ ॥
दिलदार मैं तावेदार, रख हमेशह, तूजहां है ।
करवाले तावेदारी, तावेदार, तो यहां है ॥ २ ॥

(५४)

गज़ल ॥

शबआधी बीती मेरे, दिलदार तो, तूकहां है ।
नहिंतो ख़बरकरदे मुझे, तलफतीहूं, तूजहां है ॥
आने कहते थे हमसे, आये न अबलों कहां है ।
करो क़रार पूरा यार, जान निकली, क्या वहां है ॥ १ ॥
ऐसा मालूम होता मुझे, आउं कह कर, तूवहां है ।
मोहब्बत कभी न करती, नयार भला, तूकहां है ॥ २ ॥

(५५)

लावनी ॥

आज सखीरी खुशी मनावें, पिया हमारे घर आये ।
बहुत दिनोंसे हमसेबिछुड़े, दिल भरमुझको लपटाये ॥
हवादार और परदेवार, खूब बंगला बनवाये ।
तरह तरह की खूब सूरतें, तसवीरें सब लग वाये ॥ १ ॥
पलंग उमदा तकिया तोषक, ऐसदार सब रखवाये ।
गुलाब सेवति बहुत मोगरा, फूलोंसिजिया बिछवाये ॥ २ ॥
खाना दाना तरह तरह का, मेवा भर भर पकवाये ।
इत्र दान और पान दान सब, ला ला कर सब रखवाये ॥ ३ ॥
साथहिं मेरे ऐश किये फिर, दिली खुशी तब बतलाये ।
आज खुशीहै ऐसी आली, मज़ा बहुतसा हम पाये ॥ ४ ॥

(५६)

लावनी ॥

क्या कहूंमैं आली तुमसे, पिया तुम्हारे हैं बांके ।
कलको शबको खिड़की सेतो, मकानमेरेआ झांके ॥
उसी वक्ततो पिया हमारे, सोतेथे जबनींद भरे ।
करवटलेने खसकेबाजू, ग़ाफिलथे नहिं ज़राटरे ॥ १ ॥
शायद मेरे पिया देखते, हालत मेरी क्याहोती ।
कहो सखीरी मरना होता, पिया जागते मैंसोती ॥ २ ॥
समझावो तुम सखी पियाको, ऐसा काम कभी नकरें ।
पिया हमारे अकड़ बाजहैं, गुस्साबरहैं गुस्सा भरे ॥ ३ ॥

(५७)

चुटकला ॥

कहां मेरो सइयां बतावो आली ॥
कहां मेरो सइयां कहां मेरो बलमा,
अबहीं लाय दिखावो आली ॥ १ ॥

बिनादेखेसइयां मोरजियरा तलफत,
प्राणपयान सुजाओ आली ॥ २ ॥

(५८)

दादरा ॥

रूठे सइयां सवतनी घरगयेरी ॥
कछुहुन बोले कछुहुन चाले, नेकन मोरढिग आयेरी।
कर भटके मोहे उतपटके, रिसभर चलउठ दयेरी ॥ १ ॥
जोरि कर चरण परीमैं हारी, तोहूं नहीं पिघलेरी।
कछुहुन जानैं असमैं भोरी, कारण का को पठयेरी ॥ २ ॥
मैंतो कछुहुन बोलीचाली, मैंतोसप्रेमहिं लहेरी ।
काजाने सवती का कीन्ही, का मोहनी सुठयेरी ॥ ३ ॥
मनावो सखी वा सइयांको, जोनहिं माने अबकेरी ।
तोसजनी हों सत्य कहतहों, अब प्राणमोर निकरेरी ॥ ४ ॥

(५९)

दादरा ॥

अबहुंन आई प्राण प्रिया मोरी ॥
पहर पहर बहु बिलपत बीतत। बाट निहारत तोरी ॥ १ ॥
नाजानों का कारण अटकी । चूकपरी नहिंथोरी ॥ २ ॥
तोर बिन मोर प्राण निकरहीं । आजा तो ढिगमोरी ॥ ३ ॥
यदिनहिं आवो तो उठिभागूं । तोरे ढिग पहुंचोंरी ॥ ४ ॥

(६०)

कहरवा॥

सजनी मोरा साजन निकर गयोरी, बिगर गयोरी ॥
बालबढ़ायेपुनि राखलगाये । योगियाको भेषबनालियोरी ॥१ ॥
हाथसुमरनीपुनिकमरलगोंटी।बगलमांमृगछालाधरलियोरी ॥२॥
थेबड़योगी काहें अवयोगी । भोगीयोगी दोउकसभयोरी ३ ॥
कैयोग त्यागें जोनहिंआवैं । मोहूं जोगनि होऊंसंगमोरी ४ ॥